सक्सेस मिरर

वर्ष : 5
अंक : 52
मई : 2014

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

इस अंक में...

9 | सम्पादकीय

10 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 | आर्थिक घटना संग्रह

- हिन्दुजा बन्धु ब्रिटेन का तीसरा सर्वाधिक धनी परिवार
- फ्रांसीसी कम्पनी एयरबस ने भारत में एयरबस इण्डिया की शुरूआत की
- भारतीय रिजर्व बैंक ने व्यापार सम्बन्धित विप्रेषण राशि की सीमा दो लाख से बढ़ाकर पाँच लाख प्रति सौदा की

25 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- द्रविड़ विवसईगल मुन्नेत्र कणगम नामक राजनीतिक दल का गठन
- नगालैंड और असम प्लास्टिक फोटो पहचान-पत्र जारी करने वाले पहले दो राज्य बने
- निर्वाचन आयोग ने काले धन पर अंकुश लगाने के लिए बहु-एजेंसी ग्रिड स्थापित किया

29 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- भारत–अमरीका ऊर्जा वार्ता नई दिल्ली में सम्पन्न
- यूरोपीय संसद ने सभी मोबाइल फोन हेतु एक ही चार्जर विकसित करने के लिए कानून पारित किया
- व्लादिमिर पुतिन ने क्रीमिया को स्वतंत्र देश के तौर पर मान्यता देने वाले आदेश-पत्र पर हस्ताक्षर किए

32 | खेल खिलाड़ी

- केन्द्रीय खेल एवं युवा मंत्रालय ने हॉकी इंडिया को राष्ट्रीय खेल महासंघ का दर्जा प्रदान किया
- कर्नाटक ने रेलवे को चार विकेट से हराकर विजय हजारे ट्रॉफी जीती
- अरविंद भट्ट ने पुरुष-एकल जर्मन ओपन खिताब जीता

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

★ व्यक्तित्व विकास

38 | हिम्मत न हारें, कर्तव्य पथ पर रहें अग्रसर, जीत आपकी होगी.

★ राजनीतिक लेख

40 | राजभाषा बनाम भाषाई राजनीति

85 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता

87 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-49 का परिणाम

89 | समसामयिकी घटना संग्रह

90 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

43 एस. एस. सी. स्टेनोग्राफर्स ग्रेड 'सी' तथा 'डी' परीक्षा, 2013

54 रेलवे रिक्रूटमेण्ट सैल (मुम्बई) ग्रुप 'डी' (प्रथम पाली) परीक्षा, 2013

59 रेलवे रिक्रूटमेण्ट सैल (कोलकाता) ग्रुप 'डी' (द्वितीय पाली) परीक्षा, 2013

64 आगामी रेलवे रिक्रूटमेण्ट प्रकोष्ठ (आर.आर.सी.) द्वारा आयोजित ग्रुप 'डी' भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

69 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, 2013 (द्वितीय पाली)

➲ सम्पादक : महेन्द्र जैन
➲ रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2
➲ सम्पादकीय ऑफिस
1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
आगरा–मथुरा बाईपास, आगरा–282 005
फोन– 4053333, 2531101, 2530966
फैक्स– (0562) 4053330, 4031570
ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdgroup.in
कस्टोमर केयर: care@pdgroup.in
➲ दिल्ली ऑफिस
4845, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली–110 002
फोन– 011-23251844/66
➲ हैदराबाद ऑफिस
1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद–44
फोन– 040-66753330
मो– 09391487283
➲ पटना ऑफिस
पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ
पटना–800 003
फोन–0612-2673340
मो–09334137572
➲ कोलकाता ऑफिस
28, चौधरी लेन, श्याम बाजार
कोलकाता– 700004
फोन– 033-25551510
मो– 07439359515
➲ लखनऊ ऑफिस
B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर
टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया,
लखनऊ– 226004
फोन– 0522-4109080
मो– 09760181118

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

सम्पादकीय

मानव-जीवन स्वप्न भी है, साधना भी है

मानव-जीवन को लक्ष्य करके गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि ''बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर नर मुनि सद्ग्रन्थन गावा।।'', क्योंकि मानव योनि साधन-धाम और मोक्ष का द्वार है. जीवन और जगत् की दृष्टि से इतनी महत्वपूर्ण वस्तु को स्वप्न अथवा स्वप्नवत् कहना अथवा समझना विधाता के प्रति अन्याय ही कहा जाएगा.

''सुबह होती है, शाम होती है, उम्र यों ही तमाम होती है'' के अनुसार समय व्यतीत होता रहता है. मात्र सुख-दुःख के अनुभव शेष रह जाते हैं और वे स्वप्नवत् प्रतीत होते हैं. अतः हम कह सकते हैं कि हम दो अवस्थाओं में जीवन व्यतीत करते हैं— जाग्रतावस्था एवं स्वप्नावस्था. तब भी जीवन को मात्र स्वप्न अथवा स्वप्नवत् कहना युक्ति-युक्त प्रतीत नहीं होता है. हम अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के स्वप्न देखते हैं और स्वप्नों को साकार करने के प्रयत्न करते हैं. मानव-जीवन की यही परिभाषा है.

जीवन को मिथ्या कहने-सुनने की परम्परा प्रायः जगद्गुरु शंकराचार्यजी के इस सूक्ति वाक्य से आरम्भ होती है—ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या. जगत्गुरु का उक्त कथन अनेक वर्षों तक विवाद का विषय रहा. इस सन्दर्भ में यहाँ तक शंका उठाई गई कि मिथ्या जगत् के मिथ्या जीव का कथन क्यों कर सत्य होना चाहिए. अन्ततः लगभग 700-800 वर्षों बाद महाप्रभु वल्लभाचार्यजी ने उक्त कथन में निहित मन्तव्य को स्पष्ट करते हुए कहा—ब्रह्म सत्यम् जगन्सत्यम्, मिथ्या संसार केवलम्. जगत् सत्य है—उसके साथ हमारे सम्बन्ध मायाजनित होने के कारण मिथ्या हैं. मैं और मेरा—संसार है और वह मिथ्या है. अतः हम इस निष्कर्ष को प्राप्त होते हैं—कि न जीवन स्वप्न है और न जगत् स्वप्न है, स्वप्न है—'संसार-मैं-मेरा' द्वारा रचित गोरखधंधा, क्योंकि यह तब तक रहता है जब तक हम जागकर वास्तविकता से दो-चार नहीं हो जाते हैं. हम स्वप्न में एक प्रकार से अपनी कल्पनाओं को साकार होते हुए देखते हैं. उन कल्पनाओं को यदि हम जीवन में सत्यसिद्ध करने का, साकार करने का प्रयत्न करें, तो हमारा जीवन कितना भिन्न हो जाए ? हम अधिकाधिक संघर्षशील बन जाएं तथा उपलब्धियों की दृष्टि से अधिक समृद्ध भी हो जाएं. इतिहास साक्षी है कि महान् वे ही व्यक्ति बनते हैं, जो स्वप्नों को साकार करने में प्रयत्नशील होते हैं. इसी को लक्ष्य करके कहा जाता है कि जीवन एक साधना भी है, एक संग्राम भी है. जो जीवन को स्वप्न कहते हैं, वे न स्वप्नों का महत्व समझते हैं और न जीवन में संघर्ष ही करना चाहते हैं. जीवन और जगत् को स्वप्नवत् कहकर एक ओर हाथ-पर-हाथ रखकर बैठ जाना प्रथमदृष्टया कितना सुखद प्रतीत होता है ? परन्तु अन्ततः कितना दुःखदायी सिद्ध होता है जब व्यक्ति यह अनुभव करता है कि इस दुर्लभ तन को हमने निष्प्रयोजन बना दिया.